

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 1 अध्याय 3: अवतारों के स्रोत

11 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



परम भगवान्, प्रत्येक अवतार के अविनाशी बीज, से असंख्य दिव्य अवतार प्रकट होते हैं — और उन सबमें श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

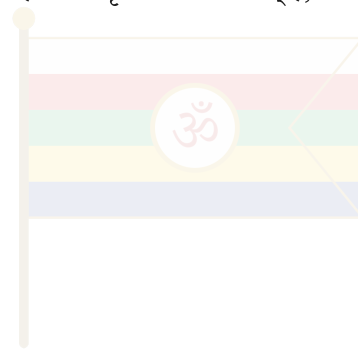
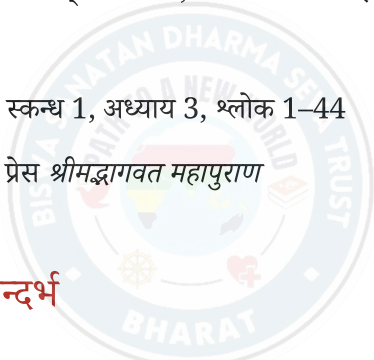
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। प्रथम अध्याय में नैमिषारण्य के ऋषियों ने पूज्य सूत जी से पूछा था कि भगवान् इस पृथ्वी पर अवतार क्यों लेते हैं; अब, इस तृतीय अध्याय में, वे उसी प्रश्न का सीधा उत्तर देते हैं। वे भगवान् के अवतारों की महती शृंखला को खोलते हैं — कारण-जल पर विराजमान आदिपुरुष से लेकर वराह

और मत्स्य, नृसिंह और वामन होते हुए, श्रीराम और श्रीकृष्ण तक, और आगे बुद्ध तथा आने वाले कल्कि तक। और इस देदीप्यमान सूची के केन्द्र में वे एक ऐसा प्रकाशमय सत्य रखते हैं जिसे समस्त भागवत बारह स्कन्धों तक खोलता रहेगा: ये अनेक रूप दिव्यता के अंश और कलाएँ हैं, किन्तु श्रीकृष्ण स्वयं परम पुरुष हैं।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 1 (प्रथम स्कन्ध)
- अध्याय: 3 (तृतीय अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: श्रीकृष्ण, समस्त अवतारों के स्रोत
- प्रमुख वक्ता: पूज्य सूत जी, उग्रश्रवा, प्राचीन कथाओं के वक्ता
- प्रमुख श्रोता: शौनक ऋषि तथा नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: नैमिषारण्य वन, भगवान् विष्णु को प्रिय
- केन्द्रीय विषय: परम भगवान् के अवतार, जिनकी परिणति इस सत्य में होती है कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं, तथा भागवत का इस संसार में आगमन
- प्रमुख श्लोक-परास: स्कन्ध 1, अध्याय 3, श्लोक 1-44
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



पूर्व अध्याय का सन्दर्भ

द्वितीय अध्याय में सूत जी ने बताया था कि समस्त धर्मों में परम धर्म है भगवान् के प्रति निष्काम, अखण्ड, प्रेममयी भक्ति, जिसके समक्ष प्रत्येक कर्म और कर्तव्य अपना सच्चा फल पाता है। यह स्थापित करके कि भक्ति *क्यों* महत्त्वपूर्ण है, अब वे उसके विषय की ओर मुड़ते हैं — उन रूपों की ओर जिनमें एक ही परम भगवान् संसार के कल्याण के लिए बार-बार अवतरित हुए हैं — ऋषियों के प्रश्न के सीधे उत्तर में: भगवान् किस प्रयोजन से जन्म लेते हैं?

कारण-जल पर विराजमान आदिपुरुष

सूत जी आदि से ही आरम्भ करते हैं। सृष्टि के उषाकाल में, अनेक लोकों को रचने की इच्छा से, परम भगवान् ने पुरुष — आदिपुरुष — का रूप धारण किया, जो सोलह कलाओं से बना है: दस ज्ञानेन्द्रियाँ-कर्मेन्द्रियाँ, पाँच तत्त्व और मन, जो सब *महत्* अर्थात् समष्टि बुद्धि से विकसित हैं। यही वह प्रथम रूप था जिसे निराकार एक ने उस विश्व के लिए धारण किया जिसे वे उद्घाटित करने वाले थे।

जगृहे पौरुषं रूपं भगवान्महदादिभिः ।

सम्भूतं षोडशकलमादौ लोकसिसृक्षया ॥ १ ॥

jagr̥he pauruṣaṁ rūpaṁ bhagavān mahad-ādibhiḥ । sambhūtaṁ ṣoḍaśa-kalam ādau loka-sisṛkṣayā ॥ 1 ॥

अर्थ: आदि में, लोकों को रचने की इच्छा से, भगवान् ने आदिपुरुष का रूप धारण किया, जो महत् आदि से विकसित सोलह कलाओं से बना है। (स्कन्ध 1, अध्याय 3, श्लोक 1)

जब वह पुरुष कारण-जल पर शयन करते हुए समाधि की योगनिद्रा में स्थित थे, तब उनके नाभि-सरोवर से एक कमल प्रकट हुआ, और उस कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए, जो संसार के समस्त प्रजापतियों के स्वामी हैं। उनके अंगों के विन्यास पर मानो अनेक लोक अध्यस्त हैं; यह भगवान् का सर्वोत्कृष्ट रूप है, शुद्ध सत्त्व का। योगीजन इसे अपनी अन्तर्दृष्टि से देखते हैं — सहस्रों भुजाओं और मुखों, सिरों और नेत्रों से अद्भुत, असंख्य मुकुटों से देदीप्यमान। नारायण नाम से विख्यात यह रूप ही समस्त परवर्ती अवतारों का अविनाशी बीज और विश्रामस्थल है: उन्हीं की एक किरण की किरण से देवता, मनुष्य और निम्न प्राणी उत्पन्न होते हैं।

एतन्नानावताराणां निधानं बीजमव्ययम् ।

यस्यांशांशेन सृज्यन्ते देवतिर्यङ्मनरादयः ॥ ५ ॥

etan nānāvatārāṇāṁ nidhānaṁ bījam avyayam । yasyāṁśāṁśena sṛjyante deva-tiryāṇ-narādayaḥ ॥ 5 ॥

अर्थ: यह रूप अनेक अवतारों का अविनाशी बीज और कोश है; उनके अंश के अंश से देवता, पशु, मनुष्य आदि प्रकट होते हैं। (स्कन्ध 1, अध्याय 3, श्लोक 5)

भगवान् के अवतार, एक-एक करके

इस स्रोत से अब सूत जी अवतारों की महती शृंखला का, उनके पारम्परिक क्रम में, वर्णन करते हैं। यह दिव्य करुणा की एक स्तुति-सी प्रतीत होती है — प्रत्येक अवतार संसार की किसी विशेष आवश्यकता का उत्तर देता है।

सर्वप्रथम भगवान् चार कुमारों — सनक और उनके भाइयों — के रूप में प्रकट हुए, ब्राह्मणों का रूप धारण कर आजीवन अखण्ड ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। अपने द्वितीय अवतार में वे दिव्य वराह बने, और समुद्र की गहराई में डूबी पृथ्वी को ऊपर उठाया, ताकि सृष्टि आगे बढ़ सके। दिव्य ऋषि नारद के रूप में, अपने तृतीय अवतार में, उन्होंने संसार को पांचरात्र दिया — कर्म से न बँधने की वैष्णव विद्या। अपने चतुर्थ रूप में वे धर्म की पत्नी मूर्ति से नर और नारायण — जुड़वाँ ऋषियों — के रूप में जन्मे और कठोर तप किया। कपिल के रूप में, अपने पंचम अवतार में, उन्होंने आसुरि ऋषि को लुप्त हुई सांख्य विद्या का उपदेश दिया। षष्ठ अवतार में, अत्रि और अनसूया से दत्तात्रेय के रूप में जन्म लेकर, उन्होंने राजा अलर्क और प्रह्लाद को आत्मविद्या सिखायी। सप्तम में, रुचि और आकूति से यज्ञ के रूप में जन्मकर, उन्होंने स्वयं मनु के प्रथम काल में इन्द्र का पद धारण किया।



अपने द्वितीय अवतार में भगवान् ने दिव्य वराह का रूप लेकर समुद्र की गहराई से डूबी पृथ्वी को ऊपर उठाया।

सूची बिना रुके आगे बढ़ती है। ऋषभदेव के रूप में, अपने अष्टम अवतार में, राजा नाभि और रानी मरुदेवी से जन्म लेकर, उन्होंने अपने ही आचरण से परमहंसों — सिद्ध आत्माओं — का मार्ग सिखाया। पृथु के रूप में, नवम अवतार में, उन्होंने संसार के कल्याण के लिए पृथ्वी से उसका समस्त गुप्त वैभव कोमलता से “दुहा”। जब किसी युग के अन्त में तीनों लोकों पर प्रलय का संकट आया, तब वे महान मत्स्य बने और भावी वैवस्वत मनु को एक नौका पर सुरक्षित पार ले गये। कूर्म (कच्छप) के रूप में, अपने ग्यारहवें अवतार में, जब देवताओं और असुरों ने समुद्र-मन्थन किया, तब उन्होंने मन्दराचल को अपनी पीठ पर धारण किया। बारहवें में वे उसी समुद्र से अमृत-कलश लिए धन्वन्तरि के रूप में प्रकट हुए; और तेरहवें में मोहिनी का मनोहर रूप धारण कर देवताओं को अमृत पिलाया। नृसिंह (नरसिंह) के रूप में, चौदहवें अवतार में, उन्होंने महाबली असुर हिरण्यकशिपु को इतनी सहजता से चीर डाला जैसे कोई तिनके को चीरता है। वामन (बौने) के रूप में, अपने पन्द्रहवें अवतार में, वे बलि के यज्ञ में आये और तीन पग भूमि माँगी। परशुराम के रूप में, सोलहवें में, उन्होंने पृथ्वी को उसके अधर्मी क्षत्रिय राजाओं से रहित किया। व्यास के रूप में, सत्रहवें में, सत्यवती से पराशर ऋषि द्वारा जन्म लेकर, उन्होंने मन्दबुद्धि जनों के लिए एक वेद को अनेक शाखाओं में विभक्त किया। श्रीराम के रूप में, अठारहवें में, उन्होंने समुद्र पर सेतु बाँधने जैसे वीरतापूर्ण कार्य किये। और अपने उन्नीसवें और बीसवें अवतारों में उन्होंने वृष्णिवंश में बलराम और श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लिया, और पृथ्वी का भार उतारा।

बुद्ध, और आने वाला अवतार

सूत जी हो चुके अवतारों पर ही नहीं रुकते। जब कलियुग भली-भाँति स्थापित हो जायेगा, वे कहते हैं, तब भगवान् बुद्ध के रूप में, अंजन के पुत्र, कीकट देश में प्रकट होंगे, ताकि देवताओं के शत्रुओं को मोहित कर सकें। और तब, कलियुग के अत्यन्त अन्त की ओर, जब राजा प्रायः लुटेरे बन जायेंगे, तब विश्व के स्वामी कल्कि के रूप में अवतरित होंगे, जो विष्णुयश से जन्म लेंगे।



कलियुग के अन्त की ओर भगवान् कल्कि के रूप में अवतरित होंगे, जो विष्णुयश से जन्म लेंगे (श्लोक 25)।

अथासौ युगसन्ध्यायां दस्युप्रायेषु राजसु ।

जनिता विष्णुयशसो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः ॥ २५ ॥

athāsau yuga-sandhyāyām dasyu-prāyeṣu rājasu । janitā viṣṇu-yaśaso nāmnā kalkir jagat-patiḥ ॥ 25 ॥

अर्थ: तब, युगों की सन्धि में, जब राजा प्रायः लुटेरों के समान हो जायेंगे, तब विश्व के स्वामी विष्णुयश के पुत्र कल्कि के रूप में जन्म लेंगे। (स्कन्ध 1, अध्याय 3, श्लोक 25)

सरोवर की धाराओं के समान असंख्य

इन अवतारों को गिनाने के पश्चात् सूत जी सावधानी से कहते हैं कि यह सूची कोई सीमा नहीं, अपितु एक दृष्टान्त है। भगवान् के अवतार, जो सत्त्व के अक्षय भण्डार हैं, समस्त गणना से परे हैं — उतने ही, वे कहते हैं, जितनी धाराएँ एक ऐसे सरोवर से निरन्तर बहती हैं जो कभी नहीं सूखता।



भगवान् के अवतार असंख्य हैं, उन धाराओं के समान जो एक अक्षय सरोवर से निरन्तर बहती हैं (श्लोक 26)।

अवतारा ह्यसङ्ख्येया हरेः सत्त्वनिधेर्द्विजाः ।

यथाविदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रशः ॥ २६ ॥

avatārā hy asaṅkhyeyā hareḥ sattva-nidher dvijāḥ । yathāvidāsinaḥ kulyāḥ sarasaḥ syuḥ sahasraśaḥ ॥ 26 ॥

अर्थ: हे ब्राह्मणो! सत्त्व के भण्डार श्रीहरि के अवतार असंख्य हैं — जैसे किसी अक्षय सरोवर से बहने वाली सहस्रों धाराएँ। (स्कन्ध 1, अध्याय 3, श्लोक 26)

महान ऋषि और मुनि, वे जोड़ते हैं, मनु, देवता और प्रजापति — जो भी महान शक्ति से सम्पन्न हैं — वे सभी स्वयं श्रीहरि की किरणें हैं, जो एक उधार लिये प्रकाश से चमकते हैं।

श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं

अब वह श्लोक आता है जिस पर यह सम्पूर्ण अध्याय, और एक अर्थ में समस्त भागवत, घूमता है। ये समस्त अवतार, सूत जी घोषणा करते हैं, अंशिक अभिव्यक्तियाँ हैं — अंश और कला, परम पुरुष के भाग और किरणें। किन्तु श्रीकृष्ण भगवान् के कोई अंश नहीं; वे स्वयं भगवान् हैं, जो युग-युग में एक ऐसे संसार को आनन्दित करने के लिए प्रकट होते हैं जो देवताओं के शत्रुओं से पीड़ित है।



समस्त अवतार दिव्यता के अंश और कलाएँ हैं, किन्तु श्रीकृष्ण स्वयं परम भगवान् हैं (श्लोक 28)।

एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ।
इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगे युगे ॥ २८ ॥

ete cāṁśa-kalāḥ puṁsaḥ kṛṣṇas tu bhagavān svayam । indrāri-vyākulaṁ lokaṁ mṛdayanti yuge yuge ॥ 28 ॥

अर्थ: ये सब परम पुरुष के अंश और कलाएँ हैं, किन्तु श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं; युग-युग में वे देवताओं के शत्रुओं से पीड़ित संसार को शान्ति प्रदान करते हैं। (स्कन्ध 1, अध्याय 3, श्लोक 28)

भगवान् के अवतारों की यह कथा, सूत जी कहते हैं, एक पवित्र रहस्य है; जो भी इसे प्रातः और सायं भक्ति से सुनाता है, वह समस्त दुःख से मुक्त हो जाता है।

जिस विश्व को वे रचते हैं, उससे परे भगवान्

अब सूत जी चर्चा को अनेक रूपों से उनके निराकार अधिष्ठान तक उठाते हैं। वह विशाल भौतिक विश्व — स्थूल विराट् रूप — भगवान् की अपनी *माया* से बुना गया है और मानो उन पर अध्यस्त है, जो अनिवार्यतः चिन्मय हैं और जिनका कोई भौतिक रूप नहीं। जैसे अविवेकी जन कल्पना करते हैं कि बादल आकाश के हैं, या धूल रिक्त वायु की है, वैसे ही अज्ञानी इस परिवर्तनशील विश्व को उस अपरिवर्तनशील आत्मा पर अध्यस्त कर देते हैं जो केवल साक्षी है। स्थूल रूप से भी परे भगवान् का सूक्ष्म रूप है, जो इन्द्रियों से अगोचर है; यही सूक्ष्म शरीर, जो भ्रान्ति से आत्मा के साथ तादात्म्य कर लिया जाता है, आत्मा को जन्म-जन्मान्तर में ढोता है। जब यह मिथ्या तादात्म्य सच्चे ज्ञान से विलीन हो जाता है, उसी क्षण ब्रह्म का साक्षात्कार उदित होता है, और आत्मा अपनी ही महिमा में स्थित हो जाती है।

इन्हीं शब्दों में, सूत जी कहते हैं, विद्वान् उस भगवान् के अवतारों और कर्मों का वर्णन करते हैं जो वस्तुतः जन्म और कर्म से रहित हैं — क्योंकि उनके अवतार और उनके कर्म वेदों के गुप्त रहस्य हैं। उनकी लीलाएँ कभी निष्प्रयोजन नहीं: केवल लीलामात्र से वे लोकों को रचते, पालते और समेटते हैं, फिर भी उनसे कभी नहीं बँधते; प्रत्येक हृदय में अदृश्य रहते हुए वे इन्द्रिय-विषयों का भोग करते-से प्रतीत होते हैं, और फिर भी, आत्मस्वामी होने के कारण, सदा अछूते रहते हैं। कोई मन्दबुद्धि प्राणी केवल चातुर्य से उनके नाम और कर्मों को नहीं जान सकता, जैसे कोई अनभिज्ञ मनुष्य किसी जादूगर की क्रीड़ा को नहीं समझ सकता।

स वेद धातुः पदवीं परस्य

दुरन्तवीर्यस्य रथाङ्गपाणेः ।

योऽमायया सन्ततयानुवृत्त्या

भजेत तत्पादसरोजगन्धम् ॥ ३८ ॥

sa veda dhātuḥ padaviṁ parasya duranta-vīryasya rathāṅga-pāṇeḥ yo 'māyayā santatayānuvṛtṭyā bhajeta tat-pāda-saroja-gandham ॥ 38 ॥

अर्थ: जो निष्कपट भाव से, अखण्ड प्रेममयी सेवा द्वारा उस चक्रधारी परमेश्वर के चरण-कमलों की सुगन्ध का अनुसरण करता है, वही उस असीम पराक्रमशाली परम सत्ता के मार्ग को जानता है। (स्कन्ध 1, अध्याय 3, श्लोक 38)

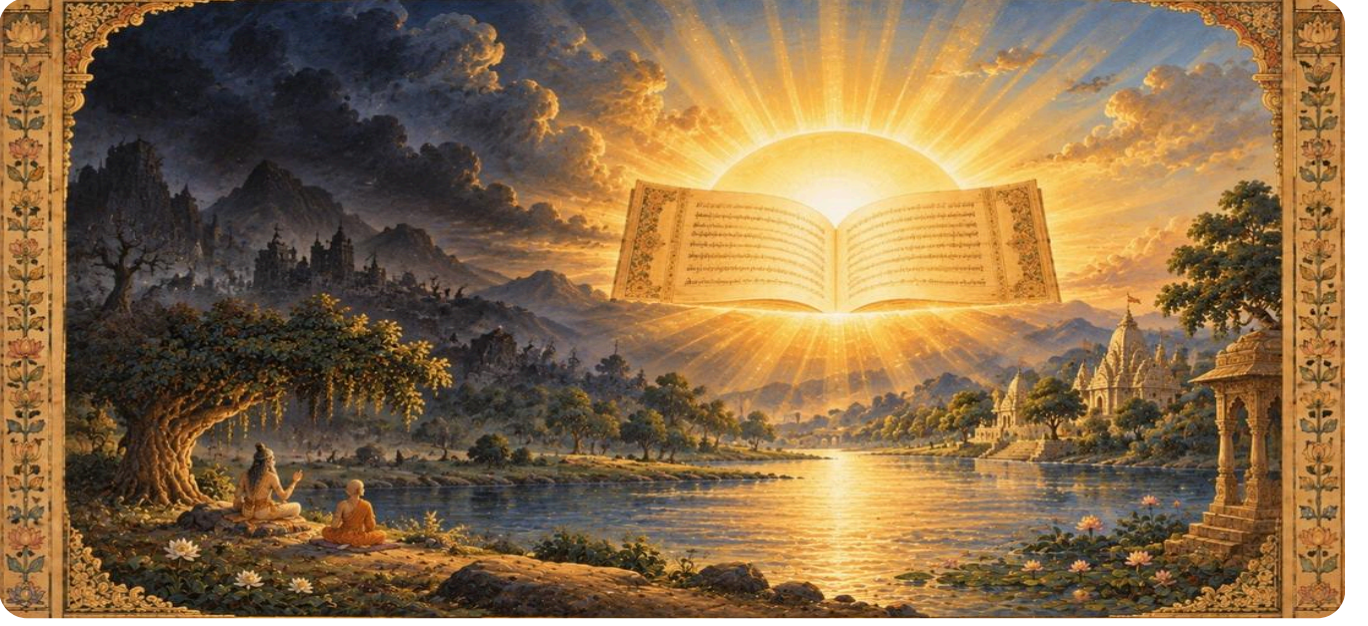
दूसरे शब्दों में, उनके मार्ग को केवल वही जानता है जो निरन्तर, सच्ची भक्ति से उनके चरण-कमलों की सुगन्ध का आस्वादन करता है — चातुर्य या कर्मकाण्ड के आडम्बर से नहीं।

प्रेममयी भक्ति का सौभाग्य

तब सूत जी, स्पष्ट स्नेह के साथ, अपने समक्ष बैठे ऋषियों की ओर मुड़ते हैं। हे धन्य आत्माओ, वे उनसे कहते हैं, तुम वास्तव में भाग्यशाली हो: इसी जीवन में, बाधाओं से भरे इस संसार में, तुम भगवान् वासुदेव, श्रीकृष्ण, समस्त विश्व के स्वामी, के प्रति अखण्ड प्रेम का अनुशीलन करते हो — और उस प्रेम से मनुष्य कभी पुनः जन्म-मृत्यु के भयंकर भँवर में नहीं गिरता। एक ही वाक्य में इस अध्याय की समस्त शिक्षा श्रोता की ओर मोड़ दी जाती है: अवतारों का अध्ययन कौतूहल के लिए नहीं, अपितु भक्ति के लिए है।

भागवत संसार में कैसे आया

अन्त में सूत जी बताते हैं कि यह शास्त्र उन तक कैसे पहुँचा। दिव्य महर्षि वेदव्यास, वे कहते हैं, ने इस पुराण की — श्रीमद्भागवत की, जो वेदों के समान है और उन यशस्वी भगवान् की कथाओं से परिपूर्ण है — मानवजाति के परम कल्याण के लिए रचना की, और इसे अपने पुत्र शुकदेव को, जो आत्मसाक्षात्कारी जनों में अग्रगण्य हैं, पढ़ाया। शुकदेव ने बदले में इसे महाराज परीक्षित को सुनाया, जो गंगा के तट पर अनशन-व्रत लिए, अग्रगण्य ऋषियों से घिरे हुए, अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा में बैठे थे। और अब, सूत जी कहते हैं, जब श्रीकृष्ण धर्म, ज्ञान आदि सहित अपने धाम को प्रस्थान कर चुके हैं, तब यह पुराण एक सूर्य के समान उदित हुआ है — उन जनों के लिए जो कलियुग के अन्धकार में अन्धे हो गये हैं।



अब जब श्रीकृष्ण अपने धाम लौट गये, भागवत एक सूर्य के समान उदित हुआ है, उनके लिए जो कलियुग में अन्धे हो गये (श्लोक 43)।

कृष्णो स्वधामोपगते धर्मज्ञानादिभिः सह ।

कलौ नष्टदृशामेष पुराणार्कोऽधुनोदितः ॥ ४३ ॥

*kṛṣṇe sva-dhāmopagate dharma-jñānādibhiḥ saha । kalau naṣṭa-dṛśām eṣa purāṇārko
'dhunoditaḥ ॥ 43 ॥*

अर्थ: धर्म और ज्ञान को साथ लिये श्रीकृष्ण के अपने लोक लौट जाने के पश्चात् ही यह भागवत-पुराण सूर्य-सम उदित हुआ है, ताकि कलियुग के घोर अन्धकार में दृष्टि गँवा चुके लोग इससे प्रकाश पा सकें। (स्कन्ध 1, अध्याय 3, श्लोक 43)

सूत जी स्वयं गंगा के तट पर उपस्थित थे, वे ऋषियों को बताते हैं, जब शुकदेव जी ने यह महान पुराण सुनाया था; उन्होंने इसे वहीं उन ऋषि की कृपा से सीखा, और अब उसे अपनी सामर्थ्य भर उतनी ही श्रद्धा से उनके समक्ष दोहरावेंगे। इन शब्दों के साथ मंच सज जाता है: अगले अध्याय से पवित्र कथा स्वयं प्रवाहित होने लगेगी।

प्रमुख शिक्षाएँ

1. एक ही भगवान् अनेक रूपों में अवतरित होते हैं। कारण-जल पर विराजमान आदिपुरुष (श्लोक 1-5) से समस्त अवतार प्रकट होते हैं — वराह, मत्स्य, नृसिंह, राम, कृष्ण आदि। रूपों की विविधता एक ही दिव्य प्रयोजन को छिपाये है: संसार का संरक्षण और उत्थान।
2. अवतार असंख्य हैं। प्रसिद्ध सूची दृष्टान्तमात्र है, समग्र नहीं (श्लोक 26); भगवान् के अवतार एक अक्षय सरोवर की धाराओं के समान अगणित हैं, और महान ऋषि तथा देवता भी उन्हीं की किरणें हैं।
3. श्रीकृष्ण स्वयं परम भगवान् हैं। अध्याय का केन्द्रीय श्लोक (श्लोक 28) अंशिक अवतारों को, जो अंश और कलाएँ हैं, श्रीकृष्ण से पृथक् करता है, जो भगवान् स्वयम् हैं — अपने पूर्ण स्वरूप में भगवान्।

4. जिस विश्व को वे रचते हैं, उससे भगवान् अछूते रहते हैं। स्थूल और सूक्ष्म रूपों से परे वे अपरिवर्तनशील साक्षी रहते हैं (श्लोक 30–36); विश्व उन पर वैसे ही अध्यस्त है जैसे बादल आकाश के प्रतीत होते हैं।
5. उन्हें केवल भक्ति से ही जाना जाता है। चातुर्य उनके नाम और कर्मों को नहीं पकड़ सकता (श्लोक 37–38); केवल वही उनके मार्ग को जानता है जो सच्चे, अखण्ड प्रेम से उनके चरण-कमलों की सेवा करता है।
6. प्रेममयी भक्ति आत्मा को मुक्त करती है। भगवान् वासुदेव के प्रति अखण्ड प्रेम (श्लोक 39) भक्त को जन्म-मृत्यु के भँवर से सदा के लिए ऊपर उठा देता है — यही समस्त शिक्षा का व्यावहारिक फल है।
7. भागवत कलियुग के लिए एक प्रकाश है। व्यास द्वारा रचित, शुकदेव द्वारा परीक्षित को सुनाया गया, यह एक सूर्य के समान उदित हुआ है (श्लोक 43) — उनके लिए जो इस युग के अन्धकार से अन्धे हैं।

एक भक्तिमयी अनुभूति

इस अध्याय में एक शान्त आश्वासन है। यह उस भय का उत्तर देता है जो प्रत्येक श्रद्धालु हृदय में बसता है: क्या भगवान् ने सचमुच इस संसार की चिन्ता की है? सूत जी का उत्तर “हाँ” की एक लम्बी शृंखला है — भगवान् वराह बनकर एक डूबती पृथ्वी को उठाने आये, मत्स्य बनकर एक धर्मात्मा को प्रलय से बचाने, राम और कृष्ण बनकर संसार का भार उतारने, और वे पुनः कल्कि बनकर आयेंगे जब युग अन्धकारमय हो जायेगा। अवतार दूर की कोई कथा नहीं; वे एक ऐसे प्रेम का लेखा हैं जो बार-बार लौटता है। और उस लेखे के केन्द्र में एक कोमल, निर्णायक पंक्ति खड़ी है — श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं — जो हमें स्मरण कराती है कि परम सत्य कोई अमूर्त तत्त्व नहीं, अपितु एक ऐसा व्यक्तित्व है जिससे हम प्रेम कर सकते हैं। इस अध्याय को पढ़ना चिन्तित तर्क-वितर्क से निकलकर सरल भक्ति में आने का निमन्त्रण पाना है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज कुछ शान्त क्षण निकालकर भगवान् के अवतारों को कृतज्ञता से स्मरण करें। उनमें से किसी एक को भी स्मरण करें — पृथ्वी को उठाने वाले वराह को, या वृष्णियों में आये श्रीकृष्ण को — और उसे अपने लिए यह स्मरण बनने दें कि दिव्यता ने इस संसार को कभी नहीं त्यागा। तत्पश्चात्, जैसा सूत जी इस पवित्र कथा के विषय में कहते हैं, इसका थोड़ा-सा “प्रातः और सायं” पाठ करें या पढ़ें, और भगवान् वासुदेव को एक कोमल प्रेममय विचार अर्पित करें। कौतूहल नहीं, भक्ति ही आपके स्मरण का फल हो।

उपसंहार

इस प्रकार श्रीमद्भागवत का तृतीय अध्याय समाप्त होता है, इस महापुराण के प्रथम स्कन्ध में, जिसे ईश्वर-साक्षात्कारी जन परमहंस-संहिता कहते हैं। इस अध्याय, श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 1 अध्याय 3 में, पूज्य सूत जी ने ऋषियों की इस अभिलाषा का उत्तर दिया कि भगवान् अवतार क्यों लेते हैं। उन्होंने अवतारों को कारण-जल पर विराजमान आदिपुरुष से लेकर वराह, मत्स्य, नृसिंह, वामन, राम और कृष्ण की करुणामयी शृंखला होते हुए, बुद्ध और आने वाले कल्कि तक बताया — और फिर वह महान सत्य घोषित किया कि ये सब दिव्यता के अंश और कलाएँ हैं, जबकि श्रीकृष्ण स्वयं परम भगवान् हैं। उन्होंने दिखाया कि भगवान्, विश्व के रचयिता होते हुए भी, सदा उससे परे रहते हैं, और तर्क से नहीं, प्रेम

से जाने जाते हैं; और उन्होंने बताया कि किस प्रकार यही पुराण, शुकदेव द्वारा मरणासन्न राजा परीक्षित को सुनाया गया, एक अन्धकारमय युग के लिए सूर्य के समान उदित हुआ है। अगले अध्याय से पवित्र कथा सचमुच खुलने लगेगी। हम भी, भगवान् के अनन्त अवतारों को स्मरण करते हुए, उनसे प्रेम करना सीखें जो इन सबके स्रोत हैं।

श्रीमद्भागवत की दिव्य वाणी हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ और आभार

मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (हिन्दी/अंग्रेज़ी), प्रथम स्कन्ध, तृतीय अध्याय, ग्रन्थ पृष्ठ 7-11।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञडम् · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट। पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-1-chapter-3-krishna-source-of-all-incarnations-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञडम् · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट